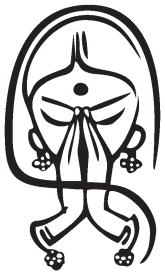

व्रतोत्सव तिथि पत्रिका

राजा बुध

मंत्री चन्द्र

वर्ष - 2020-21

परम पूज्य गुरूदेव के श्री चरणों में पावन श्रद्धांजलि

सम्पादक मण्डल

श्री गायत्री परिवार ट्रस्ट, बरेली

मैकनियर रोड, निकट टीबरीनाथ मन्दिर, बरेली

फोन नं० 0581-2543763, 8273533809, 9837052398, 8273331529

श्री गायत्री शक्तिपीठ के विषय में अधिक जानकारी एवं किसी प्रकार के सुझाव के लिए सम्पर्क करें:–

: 8273533809

: 8273533809

: www.gpssct.com

टाइपिंग में हुई गलतियों के लिये क्षमा करें।

आपके महत्वपूर्ण सुझाव का स्वागत है।

वि. संवत् २०७७ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री आदि का फल

'प्रमादी' नामक नव-सम्वत्सर का फल (वि.सं. २०७७)

नव विक्रमी संवत् २०७७ के आरम्भ में बार्हस्पत्यमान (गुरूमान) से शिव (रूद्र) विंशति के अन्तर्गत **'दशम युग'** का द्वितीय **'प्रमादी'** नामक (सम्वत्सरों में 47वाँ) नया संवत्सर विद्यमान होगा। **ध्यान रहे,** नया विक्रमी संवत् २०७७, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में अर्थात् 25 मार्च 2020 ई., तद्नुसार १२ चैत्र, बुधवार से प्रारम्भ होगा।

'बुधवार' से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा भी **'बुध'** होगा। यद्यपि **'प्रमादी'** नामक सवंत्सर का आरम्भ गतवर्ष 10 अप्रैल, 2019 ई. से हो चुका है तथा आगामी **'आनन्द'** नामक संवत्सर भी **लगभग 6 अप्रैल 2020 ई. से प्रवृत्त हो जायेगा।**

'प्रमादी' नामक संवत्सर का प्रयोग वर्षपर्यन्त ही रहेगा। धार्मिक, कर्मकाण्डी विद्वान् **6 अप्रैल 2020 ई. के बाद** प्रमादी नामक संवत्सर का उच्चारण करने के बाद **'परं वर्तमाने आनन्द नाम संवत्सरे'** का प्रयोग भी कर सकते हैं।

'प्रमादी' नामक नया वि. संवत् २०७७, गत चैत्र अमावस की समाप्ति (24 मार्च), प्रविष्टे ११ चैत्र, मंगलवार को दोपहर 2 बजकर 58 मिनट पर (14.58) कर्क लग्न में प्रवेश करेगा। परन्तु शास्त्र नियमानुसार नव वि.सं. २०७७ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 25 मार्च, बुधवार (प्रविष्टे १२ चैत्र) रेवती नक्षत्र में होगा। **वर्ष का राजा बुध** तथा **मन्त्री चन्द्र** होगा। **'प्रमादी'** नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों **में इस प्रकार वर्णित है :-**

निष्पत्तिः सर्वसस्यानां रसानां च महर्घता।
मरकस्य भयं विद्यात् प्रमादीति हि वत्सरे।।

अर्थात् **'प्रमादी'** नामक सम्वत्सर में सभी प्रकार के धान्य, फसलों, अनाज का यथेष्ठ उत्पादन होगा। सब रसादि पदार्थ, गुड़, चीनी आदि के मूल्यों में भी वृद्धि होगी। सुभिक्ष एवं सुख हो। आषाढ़ मास में वर्षा कम हो, भद्रपद में वर्षा अधिक होगी। धान्य में तीन गुना तक लाभ अर्थात् विशेष मूल्य वृद्धि होगी। परन्तु कुछ क्षेत्रों में उपद्रव, राजनीतिक एवं जातीय हिंसा के कारण भय का वातावरण उपस्थित होगा।

संवत् (सम्वत्सर) का वाहन - वि. संवत् २०७७ का राजा बुध होने से सम्वत् का वाहन गीदड़ होने से देश में विभिन्न भागों विशेषकर दक्षिणोत्तरी प्रान्तों में शासन-परिवर्तन, विग्रह एवं राजनैतिक उथल-पुथल होगी। राजनैतिक अस्थिरता बने। कहीं खाद्यान्न की कमी रहे एवं उनके मूल्यों में विशेष तेजी बने। खण्ड एवं विषम वर्षा हो। प्रजा में क्लिष्ट रोग एवं आर्थिक परेशानियाँ बढ़ें।

कुछ विद्वान राजा बुध होने पर संवत् का वाहन **'झूला या सियार'** को भी मानते हैं। सियार वाहन होने पर पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है। व्यापक दुर्भिक्ष अर्थात् बहुत स्थानों पर भयानक सूखा व अकाल जन्य परिस्थितियाँ बनेगी। विभिन्न देशों में टुकड़ों में अथात् थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् टकराव, संघर्ष एवं युद्ध होता रहेगा।

कुम्भ महापर्व-हरिद्वार (14 अप्रैल, बुधवार, सन् 2021 ई.)

कुम्भ राशि पर बृहस्पति का और मेष राशि पर सूर्य का योग होने पर हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व का आयोजन किया जाता है। तद्नुसार आगामी वर्ष (सन् 2021 ई.) हरिद्वार के पावन तीर्थ पर कुम्भ-महापर्व का आयोजन होने जा रहा है। कुम्भ-महापर्व भारतीय संस्कृति एवं हिन्दु समाज का महान एवं अद्वितीय महापर्व है।

मुख्य शाही स्नान 14 अप्रैल बुधवार सन् 2021 ई. (वैशाख संक्रान्ति की पुण्यकाल तिथि) को होगा। [यद्यपि वि. संवत् 2078 में वैशाख संक्रान्ति का दिन 13 अप्रैल मंगलवार है, परन्तु अर्द्धरात्रि के बाद संक्रान्ति प्रवेश होने से संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल 14 अप्रैल बुधवार को होगा, अतएव कुम्भ महापर्व का मुख्य शाही स्नान भी 14 अप्रैल 2021 ई. को मान्य होगा।]

कुम्भ-महापर्व के मुख्य स्नान दिन (14 अप्रैल 2021 ई. बुधवार) से पहिले और पश्चात् की कुछ पुण्य तिथियां होंगी, जो स्नान-दान के लिए कुम्भ-महापर्व की भान्ति ही विशेष पुण्य प्रदायक रहेंगी।

सन् 2021 ई. में कुम्भ-महापर्व की पुण्य स्नान-तिथियाँ

(1) मकर-संक्रान्ति-14 जनवरी, गुरूवार (2)पौष पूर्णिमा-28 जनवरी गुरूवार, (3) श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी-31 जनवरी रविवार, (4) माघ (मौनी) अमावस (महोदय-योग)-11 फरवरी गुरूवार (5) वसन्त पंचमी-16 फरवरी मंगलवार, (6) माघ पूर्णिमा-27 फरवरी शनिवार, (7) श्रीमहाशिवरात्रि स्नान-11 मार्च गुरूवार (8) महाविषुव दिन स्नान-20 मार्च शनिवार, (9) फाल्गुन पूर्णिमा-28 मार्च रविवार, (10) वारूणी पर्व स्नान-8 अप्रैल गुरूवार, **(11) सोमवती (चैत्री) अमावस-12 अप्रैल सोमवार,** (12) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा-13 अप्रैल मंगलवार **(13) वैशाख संक्रान्ति प्रमुख शाही स्नान-14 अप्रैल बुधवार,** (14) श्रीरामनवमी (शाही स्नान)-21 अप्रैल बुधवार, (15) चैत्र पूर्णिमा-27 अप्रैल मंगलवार, (16) वैशाख अमावस-11 मई मंगलवार **(17) अक्षय तृतीया (शाही स्नान)-14 मई शुक्रवार।**

ध्यान रहें, 6 अप्रैल मंगलवार 2021 ई. से गुरूवार के कुम्भ राशि में प्रवेश होने के बाद ही कुम्भ-महापर्व का विशेष माहात्म्य प्रारम्भ होगा, परन्तु स्नान, दानादि, मास-स्नान का महत्व 14 जनवरी 2021 ई. से प्रारम्भ होगा। 12 अप्रैल 2021 ई. को सोमवती अमावस्या भी पुण्यप्रदा तिथि होने के कारण इस दिन भी शाही स्नान की उद्घोषणा की जा सकती है, क्योकिं शाही-स्नान की तिथियाँ का निर्णय विभिन्न अखाड़ा परिषदों द्वारा ही किया जाता है।

सोमवती अमावस्या का माहात्म्य (2020-21 ई.)

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। **स्कन्द पुराण** के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होगा है-

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्नान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है -

सोमवारे स्वमावस्या तत्रैव बहुपुण्यदा।
विप्राणां भोजनं देयं तत्र पुण्यफलेप्सभिः।।

पुरूषार्थ-चिन्तामणि के अनुसार तो अमावस्या यदि सोमवार या मंगलवार अथवा गुरूवार को हो तो उस योग के पर्व को पुष्कर योग कहते है। इन योगों का फल सूर्यग्रहण में किए हुए स्नान, दान-पुण्य आदि से भी सौ गुणा अधिक माना गया है।

सोमवती अमावस्या के योग में, यदि चन्द्रमा अश्विनी, कृतिका, पुष्य, रोहिणी, विशाखा, मघा, उ.फा., मूला, उ.षा., श्रवण या उ.भा.-इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में संचरित हो, तो ऐसे योग में तैयार की (जड़ी-बूटियों से निर्मित) गई औषधि अनेक प्रकार के कायिक एवं मानसिक रोगों में लाभकारी होती है। इनके अतिरिक्त **सोमवती अमावस के** विशिष्ट योग में पितृ-दोष की शान्ति, धन/सम्पदा सम्बन्धी परेशानियाँ, लड़के या लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान कष्ट आदि बाधाऐं एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मशुद्धि, स्नानदान, जप पाठ आदि की दृष्टि से सोमवती अमावस का विशेष महत्व होता है। इस दिन व्रत धारण करके अपने इष्टदेव एवं भगवान **विष्णु एवं शिव** पूजन, चन्द्र तथा **पीपल वृक्ष** की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, दुग्ध-युक्त शुद्ध जल से सींचन एवं फूल-फलों, मिष्ठान्न, क्षीर, धूप-दीप आदि द्रव्यों से पूजन करके 108 बार अथवा 7 बार प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2020-21 ई. में सोमवती अमावस्याऐं:- (1) श्रावण सोमवती-20 जुलाई 2020 ई. (2) मार्गशीर्ष सोमवती-14 दिसम्बर 2020 ई. (3) चैत्र सोमवती-12 अप्रैल 2021 ई.। **गुरूवारी अमावस्या** का भी स्नान, दानादि में विशेष महत्व है- (1) शुद्ध आश्विन अमावस-17 सितम्बर (2) माघ अमावस-11 फरवरी 2021 ई.

शनिवारी अमावस- फाल्गुन अमावस-13 मार्च 2021 ई.।

एकादशी व्रत-2020-21 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा।

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी विद्धा एकादशी कहलाती है।
2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है। इसीलिए 'स्मार्त' (अर्थात् जिसमें साधारण गृहस्थी लोग भी सम्मिलित हैं) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रखते हैं।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	6 जनवरी सोमवार
षट्तिला (माघ कृष्ण)	20 जनवरी सोमार
जया (माघ शुक्ल)	5 फरवरी बुधवार
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	19 फरवरी बुधवार
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	6 मार्च शुक्रवार
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण) वैष्णव	20 मार्च शुक्रवार
कामदा (चैत्र शुक्ल)	4 अप्रैल शनिवार
वरूथिनी (वैशाख शुक्ल)	18 अप्रैल शनिवार
मोहिनी (वैशाख शुक्ल) वैष्णव	4 मई सोमवार
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	18 मई सोमवार
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	2 जून मंगलवार
योगिनी (आषाढ़ शुक्ल)	17 जून बुधवार
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	1 जुलाई बुधवार
कामिका (श्रावण कृष्ण)	16 जुलाई गुरूवार
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	30 जुलाई गुरूवार
अजा (भाद्रपद्र कृष्ण)	15 अगस्त शनिवार
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	29 अगस्त शनिवार
इन्दिरा (शुद्ध आश्विन कृष्ण)	13 सितम्बर रविवार
पुरूषोत्तमा (अधि. आश्विन शुक्ल)	27 सितम्बर रविवार
पुरूषोत्तमा (अधि. आश्विन कृष्ण)	13 अक्टूबर मंगलवार
पापांकुशा (शुद्ध आश्विन शुक्ल)	27 अक्टूबर मंगलवार
रमा (कार्तिक कृष्ण)	11 नवम्बर बुधवार
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शुक्ल) वैष्णव	26 नवम्बर गुरूवार
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृष्ण) वैष्णव	11 दिसम्बर शुक्रवार
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शुक्ल)	25 दिसम्बर शुक्रवार
(सन् 2021 ई.)	
सफला (पौष कृष्ण)	9 जनवरी शनिवार
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	24 जनवरी रविवार
षट्तिला (माघ कृष्ण)	8 फरवरी सोमवार
जया (माघ शुक्ल)	23 फरवरी मंगलवार
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	9 मार्च मंगलवार
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	25 मार्च गुरूवार
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	7 अप्रैल बुधवार

नोट : स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत के दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों दोनों के लिए ग्राह्य है।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2020-21 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मि.)	पुण्यकाल विवरण (भा.स्टै.टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. मंग	26–07	अगले दिन प्रात: 8.31 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर. गुरू	15–03	प्रात: 8.39 बाद सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	11–53	सूर्योदय बाद सारा दिन
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. सोम	20–23	दोपहर 13.59 बाद
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई, गुरू	17–16	प्रात: 10.52 बाद
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून, रवि	23–53	अगले दिन प्रात: 6.17 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. गुरू	10–46	सूर्योदय से सायं 17.10 तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. रवि	19–10	दोपहर 12.46 बाद
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. बुध	19–07	दोपहर 12.43 बाद
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्टू. शनि	7–05	दोपहर 13.29 तक
मार्ग. संक्रान्ति	15 नवं. रवि	30–53	अगले दिन दोपहर 13.17 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. मंग	21–31	मध्याह्न बाद
माघ संक्रान्ति (21)	14 जन. गुरू	8–14	सूर्योदय से दोपहर 14.28 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर. शुक्र	21–11	दो2.47 सेअगलेदिन 13.11 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च रवि	18–03	मध्याह्न 11.39 बाद

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

माघ	24 जन शुक्र
फाल्गुन	23 फर रवि
चैत्र (भौमवती)	24 मार्च मंग
वैशाख	22 अप्रै बुध
ज्येष्ठ	22 मई शुक्र
आषाढ़	21 जून रवि
श्रावण (सोमवती)	20 जुला सोम
भाद्रपद	19 अग बुध
प्रा. शुद्ध आश्विन	17 सितं गुरू
द्वि. अधि. आश्विन	16 अक्टू शुक्र
कार्तिक	15 नवं रवि
मार्गशीर्ष (सोमवती)	14 दिस सोम
(सन् 2021 ई.)	
पौष	13 जन बुध
माघ	11 फर गुरू
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 मार्च शनि
चैत्र (सोमवती)	12 अप्रै सोम

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	13 जन सोम
फाल्गुन	12 फर बुध
चैत्र	12 मार्च गुरू
वैशाख	11 अप्रै शनि
ज्येष्ठ	10 मई रवि
आषाढ़	8 जून सोम
श्रावण	8 जुला बुध
भाद्रपद (बहुला चतुर्थी)	7 अग शुक्र
प्र. शुद्ध आश्विन	5 सितं सोम
द्वि अधि. आश्विन	5 अक्टू सोम
कार्तिक (करवाचौथ)	4 नवं बुध
मार्गशीर्ष	3 दिसं गुरू
(सन् 2021 ई.)	
पौष	2 जन शनि
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	31 जन रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	2 मार्च मंग
चैत्र	31 मार्च बुध

पितृपक्ष में श्राद्ध-2020 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृतर्पण एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख शान्ति तथा वंश वृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्व किए जाने के कारण ही इसका नाम ''श्राद्ध'' है।

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	1 सितं, मंग
प्रतिपदा का श्राद्ध	2 सितं, बुध
द्वितीया का श्राद्ध	3 सितं, गुरू
तृतीया का श्राद्ध	5 सितं, शनि
चतुर्थी का श्राद्ध	6 सितं, रवि
पंचमी का श्राद्ध	7 सितं, सोम
षष्ठी का श्राद्ध	8 सितं, मंग
सप्तमी का श्राद्ध	9 सितं, बुध
अष्टमी का श्राद्ध	10 सितं, गुरू
नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	11 सितं, शुक्र
दशमी का श्राद्ध	12 सितं, शनि
एकादशी का श्राद्ध	13 सितं, रवि
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	14 सितं, सोम
त्रयोदशी का श्राद्ध	15 सितं, मंग
★ चतुर्दशी का श्राद्ध/अपमृत्यु वालों का श्राद्ध	16 सितं, बुध
अमावस/अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध/सर्वपितृ श्राद्ध	17 सितं, गुरू

★ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

दिन में कभी भी 10 मिनट एकांत सेवन कीजिए, चन्द्रमा की शांति होगी।

प्रदोष व्रत-2020-21 ई.

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते है। परन्तु शनि प्रदोष व्रत सन्तान प्राप्ति के लिए, भौम प्रदोष ऋणमोचन, मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए सोम प्रदोष व्रत तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए अर्क (रवि) प्रदोष व्रत विशेष अधिक फलदायी होता है।

पौष शुक्ल	8 जन बुध
माघ कृष्ण	22 जन बुध
माघ शुक्ल	7 फर शुक्र
फाल्गुन कृष्ण	20 फर गुरू
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	7 मार्च शनि
चैत्र कृष्ण	21 मार्च शनि
चैत्र शुक्ल	5 अप्रै रवि
वैशाख कृष्ण (सोम)	20 अप्रै सोम
वैशाख शुक्ल (भौम)	5 मई मंग
ज्येष्ठ कृष्ण	20 मई बुध
ज्येष्ठ शुक्ल	3 जून बुध
आषाढ़ कृष्ण	18 जून गुरू
आषाढ़ शुक्ल	2 जुला गुरू
श्रावण कृष्ण (शनि)	18 जुला शनि
श्रावण शुक्ल (शनि)	1 अग शनि
भाद्रपद कृष्ण	16 अग रवि
भाद्रपद शुक्ल	30 अग रवि
प्र. शुद्ध आश्विन कृष्ण	15 सित मंग
प्र. (अधि) आश्विन शुक्ल	29 सित बुध
द्वि. (अधि) आश्विन कृष्ण	14 अक्टू बुध
द्वि. शुद्ध आश्विन शुक्ल	28 अक्टू बुध
कार्तिक कृष्ण	13 नवं शुक्र
कार्तिक शुक्ल	27 नवं शुक्र
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	12 दिसं शनि
मार्गशीर्ष शुक्ल	27 दिसं रवि
(सन् 2021 ई.)	
पौष कृष्ण	10 जन रवि
पौष शुक्ल (भौम)	26 जन मंग
माघ कृष्ण (भौम)	9 फर मंग
माघ शुक्ल	24 फर बुध
फाल्गुन कृष्ण	10 मार्च बुध
फाल्गुन शुक्ल	26 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	9 अप्रै शुक्र

पूर्णिमा व्रत (2020-21 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	10 जन. शुक्र
माघ	09 फर. रवि
फाल्गुन	09 मार्च सोम
चैत्र	08 अप्रै. बुध
वैशाख	07 मई गुरू
ज्येष्ठ	05 जून शुक्र
आषाढ़	05 जुला. रवि
श्रावण	03 अग. सोम
भाद्रपद	02 सितं. बुध
आश्विन (अधिक)	01 अक्टू. गुरू
शुद्ध आश्विन	31 अक्टू. शनि
कार्तिक	30 नवं. सोम
मार्गशीर्ष	30 दिसं. बुध
---(2021 ई.)---	
पौष	28 जन. शुक्र
माघ	27 फर. शनि
फाल्गुन	28 मार्च रवि

सन् 2020-21 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, आमवसादि - एक दृष्टि में

मास (2020-21)	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्यनारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय. व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	6, 20	8, 22	10	10	13	24
फरवरी	13 (फाल्गु.)	5, 19	7, 20	8	9	12	23
मार्च	14 (चैत्र)	6, 20 (वै.)	7, 21	9	9	12	24
अप्रैल	13 (वैशा.)	4, 18	5, 20	7	8	11	22–23
मई	14 (ज्ये.)	4 (वै.), 18	5, 20	6	7	10	22
जून	14 (आषा.)	2, 17	3, 18	5	5	8	21
जुलाई	16 (श्राव.)	1, 16, 30	2, 18	4	5	8	20
अगस्त	16 (भाद्र.)	15, 29	1, 16, 30	3	3	7	19
सितम्बर	16 (आश्वि.)	13, 27	15, 29	1	2	5	17
अक्टूबर	17 (कार्ति.)	13, 27	14, 28	1, 31	1, 31	5	16
नवम्बर	15 (मार्ग.)★	11, 26	13, 27	29	30	4	15
दिसम्बर	15 (पौष)	11 (वै.), 25	12, 27	29	30	3	14
जनवरी (21)	14 (माघ)	9, 24	10, 26	28	28	2, 31	13
फरवरी (21)	12 (फाल्गुन)	8, 23	9, 24	26	27	–	11
मार्च (21)	14 (चैत्र)	9, 25	10, 26	28	28	2, 31	13
अप्रैल (21)	13अप्रै.(वैशा.)	7	9	–	–	–	12

नोट : स्थानभेद के अनुसार मार्गशीर्ष संक्रान्ति 16 नवम्बर को भी होगी।

मासशिवरात्रि व्रत (2020-21 ई.)

माघ 23 जनवरी गुरूवार
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि) 21 फरवरी शुक्रवार
चैत्र 22 मार्च रविवार
वैशाख 21 अप्रैल मंगलवार
ज्येष्ठ 20 मई बुधवार
आषाढ़ 19 जून शुक्रवार
श्रावण 19 जुलाई रविवार
भाद्रपद 17 अगस्त सोमवार
प्र. शुद्ध आश्विन 15 सितम्बर मंगलवार
द्वि. (अधि.) आश्विन 15 अक्टूबर गुरूवार
कार्तिक 13 नवम्बर शुक्रवार
मार्गशीर्ष 13 दिसम्बर रविवार

(सन् 2021)

पौष 11 जनवरी सोमवार
माघ 10 फरवरी बुधवार
फाल्गुन (श्री महाशिवरात्रि) 11 मार्च गुरूवार
चैत्र 10 अप्रैल शनिवार

ग्रहण विवरण वि. संवत् २०७७

विक्रम संवत् २०७७ (सन् 2020-21 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर दो ग्रहण घटित होगें :-

1. कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई., रविवार)

2. खग्रास सूर्यग्रहण (14 दिसम्बर 2020 ई., सोमवार)

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहण का संक्षिप्त विवरण

1. कंकण सूर्यग्रहण (14/15 दिसम्बर, 2020 ई. सोमवार) :- भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण

1. कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण (21 जून 2020 ई., आषाढ़ अमावस, रविवार) :-

यह कंकणाकृति सूर्यग्रहण 21जून 2020 ई. की प्रातः से दोपहर तक सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा। इस ग्रहण की कंकणाकृति केवल उत्तरी-राजस्थान, उत्तरी-हरियाणा तथा उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरी क्षेत्रों में से गुजरेगी।

भारत के अतिरिक्त - यह ग्रहण दक्षिणी-पूर्वी यूरोप, ऑस्ट्रेलिया के केवल उत्तरी क्षेत्रों, न्यू-गियाना, फिजी, अधिकतर अफ्रीका (दक्षिणी देशों को छोड़कर), प्रशान्त व हिन्द महासागर, मध्य पूर्वी एशिया (अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मध्य-दक्षिणी चीन, वर्मा, फिलीपीन्स आदि) में दिखाई देगा। भूलोक पर इस कंकण-ग्रहण का समय इस प्रकार रहेगा :-

	घं.	मि.	सै.	
ग्रहण प्रारम्भ	9	15	58	(भा.स्टैं.टा.) 21 जून 2020 ई.
कंकण प्रारम्भ	10	17	45	
परमग्रास (मध्य)	12	10	04	
कंकण समाप्त	14	02	17	
ग्रहण समाप्त	15	04	01	

ग्रासमान = 99.4
ग्रहण की अवधि = 5घं.-48मिं.-03सैं.
कंकण की अविध = 00मिं.-38सैं.

ग्रहण का सूतक - इस ग्रहण का सूतक 20 जून 2020 ई. की रात्रि लगभग 9घं-16मिं (21-16) से प्रारम्भ हो जायेगा।

ग्रहण के समय क्या करें-क्या न करें?

जब ग्रहण का प्रारम्भ हो रहा हो, तो उस समय से पहिले ही स्नान-जप अर्थात् संकल्पादि कर लें, मध्यकाल में होम, देवपूजा, पाठ और ग्रहण का मोक्ष समीप होने पर दान तथा पूर्ण मोक्ष होने पर पुनः स्नान करना चाहिए।

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुराचर्नम्।
मुच्यमाने सदा दानं विभुक्तौ स्नानमाचरेत्।। (ज्यो.नि.)

सूर्यग्रहण काल में भगवान सूर्य-उपासना, आदित्य हृदय-स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र आदि सूर्य-स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी, ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं रखना चाहिए। परन्तु तेल, घी, दूध, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार, चटनी, मुरब्बा आदि में तिल या कुशातृण रख देने से ये ग्रहणकाल में दूषित नहीं होते हैं। सूखे खाद्य पदार्थों में तिल या कुशा डालने की आवश्यकता नहीं। (मन्वर्थ मुक्तावली)

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलमर्दन वर्जित है। झूट-कपटादि वृथा अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, नाखुन काटने आदि से परहेज करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं।

गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्जी काटने, शयन करने, पापड़ सेंकने आदि उत्तेजक कार्यों से परहेज करना चाहिए तथा धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित रहें। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्गुणी होती है। चूढ़ामणि ग्रहण होने से कुरूक्षेत्र, फाल्गुन, हरिद्वार, प्रयागराज आदि तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

रोग शान्ति के लिए ग्रहणकाल में ''श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र'' का जप करना शुभ होता है।

स्मार्त्त और वैष्णव का भेद

स्मार्त्त- वेद, श्रृति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्मपरायण प्रायः सभी ग्रहस्थी लोग स्मार्त्त कहलाते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के साधारण गृहस्थी परिवार स्मार्त्त सम्प्रदाय अनुसार ही अपने सभी व्रतोपवास के साधारण नियम अनुकरणीय करते हैं। पुराण, संहिता एवं स्मृतियों में स्मार्त्तों के लिए स्थान-स्थान पर गृही या गृहस्थ शब्द दौर वैष्णवों के लिए वनवासी या यति शब्दों का प्रयोग किया गया है।

वैष्णव-वे धर्मपरायण लोग जिन्होनें किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरू से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्रीगुरू द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्रीखण्ड, चन्दन या गोपी चन्दन या विष्णुचरण का तिलक, त्रिपुण्ड्र, उर्द्धपुण्ड आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्तजन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्मसिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त्त एवं

गृहस्थ-जनों को पूर्वविद्धा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है :-

''स्मार्त्तानां ग्रहिणां पूर्वो पोष्या। यतिर्भिः निष्काम ग्रहिभिः वनस्थैः विधवाभिर्वैष्णवैश्च परैवोपोष्या।। (धर्मसिन्धु)

चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहण-वि. संवत् २०७७

''**उपच्छाया ग्रहण**'' वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पहिलें चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है, जिसे चन्द्र-मालिन्य अथवा इंग्लिश (Penumbra) भी कहा जाता है। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया दूसरे शब्दों में भूभा (Umbra) में प्रवेश करता है। भूभा में चन्द्रमा के संक्रमणकाल को चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

ध्यान रहें, कई बार पूर्णिमा को चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर, उपच्छाया शंकु से ही बाहर निकल जाता है। इस उपच्छाया के समय चन्द्रमा का बिम्ब केवल धुन्धला पड़ता है, काला नहीं होता तथा धुंधलेपन को साधारण नंगी आंखा से देख पाना सम्भव नहीं होता। धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों (उपच्छाया) में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण **उन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। प्रत्येक चन्द्रग्रहण घटित होने से पहिले तथा बाद में भी चन्द्रमा को पृथ्वी की इस उपच्छाया में से गुजरना पड़ता है, जिसे ग्रहण की संज्ञा नहीं दी जा सकती।**

आगामी वर्ष विं. संवत् 2077 (सन् 2020-21 ई.) में भूलोक पर तीन उपच्छाया चन्द्रग्रहण घटित होगें :-

1. 5/6 जून, 2020 ई. शुक्रवार
2. 5 जुलाई 2020 ई. रविवार (भारत में अदृश्य)
3. 30 नवम्बर 2020 ई. सोमवार

1. **प्रथम उपच्छाया ग्रहण (5/6 जून, 2020 ई. शुक्र/शनि) :-** यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण आरम्भ से समाप्ति तक भारत में देखा जा सकेगा। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं :-

स्पर्श (Enters Penumbra)	23-16 (11.16PM)	(भा.स्टैं.टा.) घं.मिं.
मध्य (परमग्रास)	24-55 (12.55AM)	
मोक्ष (Leaves Penumbra)	26-34 (02.34AM)	

इस बात का ध्यान रहे कि यह उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चांदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता है। इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक स्नानदानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा।

2. **द्वितीय उपच्छाया ग्रहण (5 जुलाई 2020 ई रविवार) :- भारत में यह उपच्छाया दृष्टिगोचर नहीं होगी।**

इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के सूतकादि, ग्रहण सम्बन्धी धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा।

3. **तृतीया उपच्छाया ग्रहण (30 नवम्बर 2020 ई. सोमवार):-** भारत के उत्तर , उत्तर-पश्चिमी, मध्य, दक्षिणी प्रान्तों में यह उपच्छाया दिखाई नहीं देगी। शेष उत्तर-पूर्वी, मध्य-पूर्वी भारत में जहाँ चन्द्रोदय सांय 17घं.-23मिं. से पहिले होगा, वहाँ यह उपच्छाया ग्रस्तोदय रूप में दृश्य होगी। अर्थात् जब चन्द्रोदय होगा, तब छाया चल रही होगी। भारत के अतिरिक्त यह उपच्छाया अधिकतर एशिया (पाकितस्तान, पश्चिमी-दक्षिणी भारत, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान को छोड़कर) इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, नार्वे, उत्तर-स्वीडन, उत्तरी-फिनलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी-अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

इस उपच्छाया ग्रहण के स्नान, सूतकादि का विचार नहीं होगा। पूर्णिमा सम्बन्धी सभी धार्मिक कृत्य जैस-व्रत, उपवास, दान, सत्यनारायण व्रत-पूजन आदि तो नि:संकोच होकर करने ही चाहिए।

वि. संवत् 2077-78
का
तिथ्यादि पंचांग
घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.)
सन् 2020-21 ई.

आश्विन (अधिक) मास का फल

विक्रम संवत् 2077 में प्रथम आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तद्नुसार 18 सितम्बर, शुक्रवार से आश्विन अधिक मास प्रारम्भ होकर 16 अक्टूबर, शुक्रवार तक व्याप्त रहेगा। प्र. आश्विन शुक्ल पक्ष और द्वितीय आश्विन कृष्ण पक्ष दोनों पक्षों के अन्तराल में सुक्रान्ति का अभाव होने से ''आश्विन मास'' अधिक मास अर्थात् पुरूषोत्म मास माना जायेगा। शास्त्रों में आश्विन अधिक मास का फल इस प्रकार से वर्णित है :-

आश्विने परचक्रेण तस्करैः प्रजाः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे।।

अर्थात् जिस वर्ष दो आश्विन मास आएं, तो उस वर्ष जनता सेना, चोरों तथा विभिन्न रोगों से दुःखी रहे, परन्तु उत्तरी भारत में सुभिक्ष, जनता के कल्याण हेतु शासनतन्त्र प्रयासरत रहे तथा लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता तथा आरोग्य भी रहेगा। दक्षिणी क्षेत्रों (राज्यों) में दुर्भक्ष अर्थात् अकालजन्य परिस्थितियाँ रहेंगी।

वि. संवत् 2077 मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टै.टा.) सन् 2020 ई.

भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वसन्त ऋतु)

(सूर्योत्तरायण)

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वसन्त ऋतु)
फाल्गुन कृष्ण	25	१	बुध	रेव.	मीन	"प्रमादी" नाम वि. संवत 2077 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त), नवरात्र प्रारम्भ (A)
	26	२	गुरू	रेव.	मे.7:16	पंचक समाप्त 7:16, शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल, स.सि.यो.
	27	३	शुक्र	अश्वि.	मेष	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, गण्डमूल 10:09 तक
	28	४	शनि	भर.	वृ.19:30	भ. 11:16 से 24:18 तक, शुक्र वृष में 15:38, दमनक चतुर्थी
	29	५	रवि	कृति.	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, गुरू. उषा. 2 मकर में 27:50, नाग पंचमी
	30	६	चंद्र	रोहि.	मि.30:06	स्कन्द षष्ठी व्रत, स.सि.यो.
	31	७	मंग	मृग.	मिथुन	भ.27:50 से, सूर्य रेवती में 6:57, बुध पू.भा. में 7:55, द्विपुष्कर योग 18:44 तक

(A) चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, घटस्थापन, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्, श्रीदुर्गा पूजा, गुड़ी पड़वा

किसी से भी किसी भी तरह की बराबरी स्वयं के खोने की तैयारी है।

वि. संवत् 2077 अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वसन्त–ग्रीष्म ऋतु)
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	८	बुध	आर्द्रा	मिथुन	भ.15:46 तक, श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, बुधाष्टमी योगी (A)
	2	९	गुरू	पुन	क.13:33	श्रीरामनवमी, श्रीदुर्गा नवमी, नवरात्र समाप्त, स.सि.यो.
	3	१०	शुक्र	पुष्य	कर्क	नवरात्र व्रत पारणा, शनि उ.षा. 4 में 7/55, गण्डमूल 18:41 बाद
	4	११	शनि	आश्ले	सिं.17:08	भ. 11:45 से 22:30 तक, कामदा एकादशी व्रत, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
	5	१२	रवि	मघा	सिंह	प्रदोष व्रत, मंगल श्रवण में 24:00, श्रीविष्णु दमनोत्सव (B)
	6	१३	चंद्र	पू.फा.	क.17:32	अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
	7	१४	मंग	उ.फा.हस्त.	कन्या	भ. 12:02 से 22:04 तक, बुध मीन में 14:20, श्रीसत्यनारायण व्रत (C)
	8	१५	बुध	चित्रा	तु.16:34	चैत्री पूर्णिमा (स्नानदानादि), वैशाखस्नान प्रारम्भ, शुक्र रोहि. में 16:03
वैशाख कृष्ण पक्ष	0	१	बुध	0 0	0 0	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा का क्षय 00 00
	9	२	गुरू	स्वा	तुला	बुध उ.भा. में 19:19
	10	३	शुक्र	विशा	वृ.16:27	भ. 11:06 से 21:32 तक, गुड फ्राईडे (क्रिश्चियन)
	11	४	शनि	अनु	वृश्चिक	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल 20:12 बाद
	12	५	रवि	ज्ये	ध.19:13	गण्डमूल विचार
	13	६	चंद्र	मूल	धनु	भ. 16:19 से 28:16 तक, सूर्य अश्वि. 1 मेष मे 20:23, वैशाख संक्रान्ति (D)
	14	७	मंग	पू.षा.	म.25:58	

वैशाख कृष्ण पक्ष	15	८	बुध	उ.षा.	मकर	
	16	९	गुरू	श्रव.	मकर	
	17	१०	शुक्र	धनि.	कुं.12:18	भ. 7:08 से 20:04 तक, पंचक प्रारम्भ 12:18, बुध रेवती में 21:41
	18	११	शनि	शत.	कुम्भ	वरूथिनी एकादशी व्रत, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
	19	१२	रवि	पू.भा.	मी.24:38	सूर्य सायन वृष में 20:16, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ
	20	१३	चंद्र	पू.भा.	मीन	भ. 27:12 से, सोम प्रदोष व्रत
	21	१४	मंग	उ.भा.	मीन	भ. 16:25 तक, मासशिवरात्रि व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ, गण्डमूल 10:23 बाद
	22	३०	बुध	रेव.	मे.13:18	पंचक समाप्त 13:18, वैशाख अमावस (स्नानदान, पितृकार्येषु) (E)
	23	३०	गुरू	आश्वि.	मेष	अमावस (स्नान, दानादि 7:56 तक), गण्डमूल 16:05 तक
वैशाख शुक्ल पक्ष	24	१	शुक्र	भर.	वृ.25:15	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल धनि. में 28:52, (F)
	25	२	शनि	कृति.	वृष	श्रीशिवाजी जयन्ती, भगवान परशुराम जयन्ती (G)
	26	३	रवि	रोहि.	वृष	भ. 25:57 से, अक्षय तृतीया, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ
	27	४	चंद्र	मृग.	मि.11:46	भ. 14:30 तक, सूर्य भर. में 12:08, शुक्र मृग. में 17:00, स. सि. यो.
	28	५	मंग	आर्द्रा.	मिथुन	आद्यगुरू श्रीशंकराचार्य जयन्ती
	29	६	बुध	पुन.	क.19:58	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	30	७	गुरू	पुष्य	कर्क	भ. 14:40 से 26:04 तक, श्रीगंगा जयन्ती, गुरूपुष्य योग, स. सि. यो.

(A) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-काँगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.), अप्रैल मास प्रारम्भ (B) आनन्द नाम संवत्सर प्रारम्भ, गण्डमूल 14:57 तक (C) श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), श्रीशिव दमनोत्सव (D) मु. 30, पुण्यकाल सं. मध्यान्ह बाद, वैशाखी पर्व (पंजाब), गं.मू. (E) बुध पूर्व में अस्त 29.10 मेला पिंजौर (हरियाणा) (F) बुध अश्वि मेष में 26:33, (G) रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, त्रिपुषकर योग 11:52 तक

वि. संवत् 2077 मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (ग्रीष्म ऋतु)
वैशाख शुक्ल पक्ष	1	८	शुक्र	आश्ले	सिं.25:05	बुध भर. में 16:01, मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस, जानकी (सीता) जयन्ती(A)
	2	९	शनि	मघा	सिंह	गण्डमूल 23:40 तक,
	3	१०	रवि	पू.फा.	क.27:09	भ. 19:42 से, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
	4	११	चंद्र	उ.फा.	कन्या	भ. 06:13 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), मंगल कुंभ में 20:39 त्रिस्पर्शा महाद्वादशी
	0	१२	चंद्र	0 0	0 0	द्वादशी तिथि का क्षय 0 0
	5	१३	मंग	हस्त	तु.27:09	भौम प्रदोष व्रत
	6	१४	बुध	चित्रा	तुला	भ. 19:45 से, श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत (B)
	7	१५	गुरू	स्वा.	वृ.27:13	भ. 6:00 तक, वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, बुध कृति. में 20:51 (C)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	8	१	शुक्र	विशा	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्णापक्ष प्रारम्भ
	9	२	शनि	अनु.ज्ये.	ध.29:02	भ.21:10 से, बुध वृष में 9:47, श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल 6:33 बाद
	10	३	रवि	मूल	धनु	भ.8:04 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, गण्डमूल 28:13 तक (D)
	11	४	चंद्र	पू.षा.	धनु	सूर्य कृति. में 6:22, शनि वक्री 9:27
	12	५	मंग	उ.षा.	म.10:17	
	13	६	बुध	श्रव.	मकर	भ. 6:00 से 18:26 तक, बुध रोहि. में 26:55, शुक्र वक्री 12:12
	14	७	गुरू	श्रव.	कुं.19:22	पंचक प्रारम्भ 19:22, सूर्य वृष में 17:16, ज्येष्ठ संक्रान्ति, 30 मुहू (E)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	15	८	शुक्र	धनि.	कुम्भ	
	16	९	शनि	शत.	कुम्भ	भ. 23:33 से, बुध पश्चिम में उदय 19:07
	17	१०	रवि	पू.भा.	मी.7:14	भ. 12:43 तक
	18	११	चंद्र	उ.भा.	मीन	अपरा एकादशी व्रत, मेला भद्रकाली एकादशी (कपूरथला) पंजाब (F)
	19	१२	मंग	रेव.	मे.19:53	पंचक समाप्त 19:53, गण्डमूल विचार
	20	१३	बुध	अश्वि.	मेष	भ. 19:43 से, प्रदोष व्रत, बुध मृग. में 24:37, राहु मृग. 4 (G)
	21	१४	गुरू	भर.	मेष	भ. 8:40 तक
	22	३०	शुक्र	कृति	वृ.7:37	ज्येष्ठ अमावस, भावुक अमावस, शनैश्चर जयन्ती, वटसावित्री व्रत (H)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	23	१	शनि	रोहि.	वृष	भावुक करिदिन, श्रीगग्ड़ा स्नान प्रारम्भ, करवीर व्रत, (सूर्य पूजा), स.सि.यो.
	24	२	रवि	मृग	मि.17:34	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य रोहि. में 26:33, बुध मिथुन में 23:574
	25	३	चंद्र	मृग	मिथुन	रम्भा तृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयन्ती, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ
	26	४	मंग	आर्द्रा	क.25:24	भ. 13:14 से 25:09 तक
	27	५	बुध	पुन.	कर्क	शुक्र अस्त 31 मई
	28	६	गुरू	पुष्य	कर्क	वक्री शुक्र रोहि. 4 में 12:27, अराण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा (I)
	29	७	शुक्र	आश्ले	सिं.6:58	भ. 21:56 से, बुध आर्द्रा में 14:06, गण्डमूल विचार
	30	८	शनि	मघा–पू.फा.	सिंह	भ. 8:57 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर) (J)
	31	९	रवि	उ.फा.	कं.10:19	वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 5:28, स.सि.यो.

(A) श्रीबगुलामुखी जयन्ती (अर्द्धरात्रि व्यापिनी), श्रीदुर्गाष्टमी (B) श्रीकूर्म जयन्ती (सायं व्यापिनी) (C) श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त, श्रीछिन्नमस्तिका जयंती, श्रीटैगोर जयंती (D) स.सि.यो. (E) पुण्यकाल सं. प्रातः 10:52 बाद, मंगल शत. में 13:59, गुरू वक्री 19:58 (F) गण्डमूल 16:58 बाद (G) केतु मूल में 17:44, मासाशिवरात्रि व्रत, सूर्य सायन मिथुन में 19:19, गण्डमूल 22:37 तक (H) (अमा. पक्ष), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ (I) शुक्र वार्धस्य प्रारम्भ 5:28 (J) गण्डमूल 6:03 तक

वि. संवत् 2077 जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य उत्तर–दक्षिणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (ग्रीष्म–वर्षा ऋतु)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	१०	चंद्र	हस्त	कन्या	भ. 25:32 से, श्रीगंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार), जून मास प्रारम्भ
	2	११	मंग	चित्रा	तु.12:00	भ. 12:05 तक, निर्जला एकादशी व्रत
	3	१२	बुध	स्वा.	तुला	प्रदोष व्रत, मंगल पू.भा. में 9:40, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पा द्वादशी
	4	१३	गुरू	विशा.	वृ.13:07	भ. 217:16 से,
	0	१४	गुरू	0 0	0 00	चतुर्दशी तिथि का क्षय 00 00
	5	१५	शुक्र	अनु.	वृश्चिक	भ. 14:00 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (A)
	6	१	शनि	ज्ये.	ध.15:12	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार
	7	२	रवि	मूल	धनु	सूर्य मृग. मे 24:27, गण्डमूल 14:11 तक
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	8	३	चन्द्र	पू.षा.	म.19:45	भ. 8:27 से 19:57 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
	9	४	मंग	उ.षा.	मकर	शुक्र पूर्व में उदय 19:20
	10	५	बुध	श्रव.	कुं.27:42	पंचक प्रारम्भ 27:42
	11	६	गुरू	धनि.	कुम्भ	भ. 21:12 से
	12	७	शुक्र	शत.	कुम्भ	भ. 10:03 तक, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 19:20
	13	८	शनि	पू.भा.	मी.14:46	
	14	९	रवि	उ.भा.	मीन	सूर्य मिथनु में 25:53, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन (B)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	15	१०	चंद्र	रेव.	मे.27:17	भद्रा 16:31 से, पंचक समाप्त 27:17, गण्डमूल विचार
	16	१०	मंग	अश्वि	मेष	भ. 5:41 तक, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.
	17	११	बुध	अश्वि	मेष	योगिनी एकादशी व्रत, गण्डमूल 6:04 तक
	18	१२	गुरू	भर.	वृ.15:03	प्रदोष व्रत, मंगलमीन में 20:15, बुध वक्री 10:25, वक्री शनि उ.षा. (C)
	19	१३	शुक्र	कृति	वृष	भ. 11:02 से 23:27 तक, मासशिवरात्रि व्रत
	20	१४	शनि	रोहि.	मि.24:35	पितृकार्येषु अमावस, सूर्य सायन कर्क में 27:14, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ (D)
	21	३०	रवि	मृग.	मिथुन	आषाढ़ अमावस, कंकण (चूड़ामणि) सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (E)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	22	१	चंद्र	आर्द्रा	मिथुन	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, वक्री बुध आर्द्रा में 13:12 (F)
	23	२	मंग	पुन.	क.7:35	रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी), जिल्काद (मुस्लि) मास प्रारम्भ (G)
	24	३	बुध	पुष्य	कर्क	भ. 21:32 से, ग्रहणवेध
	25	४	गुरू	आश्ले	सिं.12:27	भ. 8:48 तक, शुक्र मार्गी 12:18
	26	५	शुक्र	मघा	सिंह	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी
	0	६	शुक्र	0 0	0 0	षष्ठी तिथि का क्षय 00 00
	27	७	शनि	पू.फा.	कं.15:51	भ. 26:54 से, विवस्वत सप्तमी
	28	८	रवि	उ.फा.	कन्या	भ. 13:45 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, स.सि.यो.
	29	९	चन्द्र	हस्ता	तु.18:27	वक्री गुरू उ.षा. 1 धनु में 29:25, भढली नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त (H)
	30	१०	मंग	चित्रा स्वा.	तुला	

शुक्र उदय
9 जून

(A) सन्त कबीर जयन्ती (622वां), श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 16:44 बाद (B) प्रातः 6:17 तक, बुध पुन. में 9:18, गण्डमूल 24:22 बाद (C) (3) में 29:20 (D) वर्षा ऋतु शुरू, ग्रहणवेध (E) सूर्य आर्द्रा में 23:27 (F) वक्री बुध पश्चिम में अस्त 29:10, शक आषाढ़ प्रारम्भ, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, ग्रहणवेध (G) मंगल उ.भा. में 28:09, ग्रहणवेध (H) मेला शरीक भवानी (काश्मीर)

वि. संवत् 2077 जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दिक्षणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वर्षा ऋतु)
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	1	११	बुध	विशा	वृ.20:56	भ.6:40 से 17:30 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत (A)
	2	१२	गुरू	अनु	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 25:14 बाद
	3	१३	शुक्र	ज्ये.	ध.24:28	गण्डमूल विचार
	4	१४	शनि	मूल	धनु	भ.11:34 से 22:54 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) (B)
	5	१५	रवि	पू.षा.	म.29:01	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा, सूर्य पुन. में 23:03
श्रावण कृष्ण पक्ष	6	१	चन्द्र	उ.षा.	मकर	श्रावण कृष्णपक्ष, प्रारम्भ, श्रावण सोमवार व्रत शुरू, अशून्यशयन व्रत
	7	२	मंग	श्रव.	मकर	भ. 21:11 से मग्ड़लागौरी व्रत प्रारम्भ
	8	३	बुध	धनि.	कुं.12:31	भ. 9:19 तक, पंचक प्रारम्भ 12:31, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
	9	४	गुरू	शत.	कुम्भ	वक्री बुध पूर्व में उदय 19:34
	10	५	शुक्र	पू.भा.	मी.22:55	नाग पंचमी (राज. व बंगाल)
	11	६	शनि	उ.भा.	मीन	भ. 13:34 से 26:41 त
	12	७	रवि	उ.भा.	मीन	बुध मार्गी 13:54, शीता सप्तमी (मध्यान्ह व्या.), गण्डमूल 8:18 बाद (C)
	13	८	चन्द्र	रेव.	मे.11:14	पंचक समाप्त 11:14, गण्डमूल विचार
	14	९	मंग	अश्वि.	मेष	गण्डमूल 14:07 तक, स.सि.यो. 14:07 तक
	15	१०	बुध	भर.	वृ.23:19	भ. 9:23 से 22:20 तक

श्रावण कृष्ण पक्ष	16	११	गुरू	कृति.	वृष	कामिका एकादशी व्रत, सूर्य कर्क में 10:46, श्रावण संक्रान्ति (D)
	17	१२	शुक्र	रोहि.	वृष	
	18	१३	शनि	मृग.	मि.09:01	भ. 24:42 से, शनि प्रदोष व्रत
	19	१४	रवि	आर्द्रा	मिथुन	भ. 12:26 तक, सूर्य पुष्य में 22:35, श्रावण शिवरात्रि व्रत
	20	३०	चंद्र	पुन.	क.15:29	श्रावण (हरियाली) अमावस, सोमवती अमावस, मेला हरिद्वार (E)
श्रावण शुक्ल पक्ष	21	१	मंग	पुष्य	कर्क	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, गण्डमूल
	22	२	बुध	आश्ले	सिं.19:16	चन्द्रदर्शन, मु.30, राहु मृग.3 केतु मूल 1 में 15:12, सूर्यसायन सिंह में 14:07
	23	३	गुरू	मघा	सिंह	भ. 27:50 से, मधुस्रवा हरियाली सिंघारा तीज, शक श्रावण प्रारम्भ (F)
	24	४	शुक्र	पू.फा.	कं.21:37	भ. 14:35 तक, दुर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी
	25	५	शनि	उ.फा.	कन्या	नाग पञ्चमी, श्रीकल्कि जयन्ती (सायान्हव्यापिनी)
	26	६	रवि	हस्त	तु.23:49	बुध पुन. में 10:34, शीतला सप्तमी (मध्यान्ह व्या.) वक्री गुरू पू.षा. 4 में (G)
	27	७	चन्द्र	चित्रा	तुला	भ. 7:10 से 18:04 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्रीदुर्गाष्टमी (H)
	0	८	चन्द	0 0	0 0	अष्टमी तिथि का क्षय 00 00
	28	९	मंग	स्वा	वृ.26:49	
	29	१०	बुध	विशा	वृश्चिक	
	30	११	गुरू	अनु.	वृश्चिक	भ. 12:34 से 23:50, पवित्रा एकादशी व्रत, गण्डमूल 7:41 बाद
	31	१२	शुक्र	ज्ये.	ध.7:05	शुक्र मिथुन में 29:9, गण्डमूल विचार

(A) नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु शयनोत्सव, जुलाई मास प्रारम्भ (B) कोकिला व्रत, श्रीशिव शयनोत्सव, वायु परीक्षा, गण्डमूल 23:22 तक (C) स.सि.यो. (D) मु. 30, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से सायं 17:10 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, मंगल रेव. में 27:32 (E) प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य (F) जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, शुक्र मृग. में 19:58, गण्डमूल 17:44 तक (G) 15:19 (H) 7:10 बाद, मेला चिन्तपूर्णी चामुण्डादर्वी (हि.प्र.) समाप्त

जब हम हंस रहे होते हैं, तो प्रभुकृपा बरस रही होती है।

वि. संवत् 2077 अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दिक्षणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वर्षा–शरद् ऋतु)
श्रावण शुक्ल पक्ष	1	१३	शनि	मूल	धनु	शनि प्रदोष व्रत, बुध कर्क में 27:31, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव (A)
	2	१४	रवि	पू.षा.	म.12:57	भ. 21:29 से, सूर्य आश्लेषा मे 21:27
	3	१५	चन्द्र	उ.षा.	मकर	भद्रा 9:29 तक, श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (भद्रा बाद) (B)
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	4	१	मंग	श्रव.	कुं.20:47	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 20:47, ऋग्वेदि उपाकर्म, गायत्री जपम्
	5	२	बुध	धनि.	कुम्भ	बुध पूर्व में अस्त 5:55
	6	३	गुरू	शत.	कुम्भ	भ. 11:33 से 24:15 तक, वक्री शनि उ.षा. 2 में 7:05 कज्जली तृतीया
	7	४	शुक्र	पू.भा.	मी.06:57	श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत, स.सि.यो.
	8	५	शनि	उ.भा.	मीन	शुक्र आर्द्रा में 17:57, गण्डमूल 16:12 बाद
	9	६	रवि	रेव	मे.19:06	पंचक समाप्त 19:06, चन्दन षष्ठी व्रत, चन्दोदय 22:42 (जालन्धर), हल षष्ठी
	10	६	चन्द्र	आश्वि	मेष	भ. 6:43 से 19:55 तक, बुध आश्ले. में 19:49, शीतला सप्तमी व्रत (C)
	11	७	मंग	भर	मेष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) गृहस्थियों के लिए
	12	८	बुध	कृति	वृ.07:37	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)
	13	६	गुरू	रोहि	वृष	भ. 25:31 से, श्रीगुग नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव
	14	१०	शुक्र	मृग	मि.18:05	भ. 14:02 तक,
	15	११	शनि	मृग	मिथुन	अजा एकादशी व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस (74 वाँ)

तनाव जीवन का स्वाभाविक अंग नहीं है, उसे आप स्वयं तैयार करते हैं।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष	16	१२	रवि	आर्द्रा	क.24:53	प्रदोष व्रत, सूर्य मघा 1 सिंह में 19:10, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 45 (D)
	17	१३	चन्द्र	पुन/पुष्य	कर्क	भ. 12:36 से 23:38 तक, बुध मघा 1 सिंह में 8:29, मासशिवरात्रि व्रत (E)
	18	१४	मंग	आश्ले	सिं.28:08	कुशाग्रहणी अमावस-''ॐ हुं फट् स्वाहा'' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम् (F)
	19	३०	बुध	मघा	सिंह	भाद्रपद अमावस, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला-झुंझुनूं (G)
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	0	१	बुध	0 0	0 0	भाद्रपद्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय 00 00
	20	२	गुरू	पू.फा.	कं.29:15	चन्द्रदर्शन, मु. 30
	21	३	शुक्र	उ.फा.	कन्या	हरितालिका तृतीया, गौर तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, मुहर्रम (मुस्लि.) (H)
	22	४	शनि	हस्त	कन्या	भ. 9:31 से 19:58 तक, सिद्धि विनायक व्रत, शुक्र पुन. में 11:20 (I)
	23	५	रवि	चित्रा	तु.6:07	ऋषि पंचमी व्रत, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), बुध पू.फा. में 28:00, शक भाद्रपद प्रारम्भ
	24	६	चन्द्र	स्वा.	तुला	सूर्य षष्ठी व्रत, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत
	25	७	मंग	विशा.	वृ.08:17	भ. 12:22 से 23:31 तक, दूर्वाष्टमी व्रत श्रीराधाष्टमी (J)
	26	८	बुध	अनु.	वृश्चिक	दधीची, गण्डमूल 13:04 बाद, स.सि.यो. 13:04 तक
	27	६	गुरू	ज्ये.	ध.12:37	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), गण्डमूल विचार
	28	१०	शुक्र	मूल	धनु	भ. 20:29 से, गण्डमूल 12:37 तक
	29	११	शनि	पू.षा.	म.19:13	भ. 8:18 तक, पद्मा एकादशी व्रत, श्रीवामन जयन्ती
	30	१२	रवि	उ.षा.	मकर	प्रदोष व्रत, सूर्य पू.फा. में 15:05, स.सि.यो. 13:52 तक
	31	१३	चन्द्र	श्रव.	कुं.27:48	पंचक प्रारम्भ 27:48, बुध उ.फा. में 13:10, शुक्र कर्क में 26:02

(A) अगस्त मास प्रारम्भ (B) बुध पुष्य में 24:26, यजुर्वेदि अर्थवेदि, उपाकर्म, हयग्रीव जयन्ती, ऋषि तर्पण, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत (C) पुत्र व्रत, गण्डमूल 22:06 तक (D) पुण्यकाल सं. दुपै. 12:46 बाद, वत्स द्वादशी (पूजा), मंगल अश्वि 1 मेष 18:31 (E) अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ-2 दिन (F) पिठोरी अमावस, पितृकोंषु अमावस (G) (राजस्थान), गण्डमूल 26:07 तक, (H) सं. 1442 हिजरी प्रारम्भ (I) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेष), चन्द्रास्त 21:30 (जालन्धर), पत्थर चौथ, सामवेदि उपाकर्म, सूर्य सायन कन्या में 21:15, शरद ऋतु प्रारम्भ (J) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ

वि. संवत् 2077 सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दक्षिणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (शरद् ऋतु)
भा.शु.	1	१४	मंग	धनि.	कुम्भ	भ. 9:39 से 22:16 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (जालंधन)(A)
	2	२५	बुध	शत.	कुम्भ	भाद्रपद पूर्णिमा (स्नानदानादि), पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, बुध कन्या (B)
प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्ण पक्ष	3	१	गुरू	पू.भा.	मी.14:15	प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में 28:48, द्वितीया (C)
	4	२	शुक्र	उ.भा.	मीन	भ. 27:32 से, गण्डमूल 23:28 बाद
	5	३	शनि	रेव.	मे.26:21	भ. 16:39 तक, पंचक समाप्त 26:21, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (D)
	6	४	रवि	अश्वि.	मेष	वक्री गुरू पू.षा. 3 में 18:21, चतुर्थी का श्राद्ध, गण्डमूल, स.सि.यो.
	7	५	चन्द्र	भर.	मेष	भरणी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत, पंचमी का श्राद्ध, गण्डमूल 5:24 तक
	8	६	मंग	भर.	वृ.15:10	भ. 24:03 से, बुध हस्त में 15:52, षष्ठी का श्राद्ध
	9	७	बुध	कृति.	वृष	भ. 13:05 तक, सप्तमी का श्राद्ध, मंगल वक्री 27:50
	10	८	गुरू	रोहि.	मि.26:37	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न, जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध
	11	९	शुक्र	मृग.	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ नवमी
	12	१०	शनि	आर्द्रा	मिथुन	भ. 16:18 से 28:15 तक, दशमी का श्राद्ध
	13	११	रवि	पुन.	क.10:36	इन्दिरा एकादशी व्रत, सूर्य उ.फा. में 9:01, गुरू मार्गी 6:12, एकादशी का श्राद्ध
	14	१२	चन्द्र	पुष्य	कर्क	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, गण्डमूल 15:52 बाद
	15	१३	मंग	आश्ले	सिं.14:25	भ. 23:00 से, भौम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, मघा-त्रयोदशी (श्राद्ध) (E)

प्रथम (शुद्ध) आश्विन कृष्ण पक्ष	16	१४	बुध	मघा	सिंह	भ. 9:29 तक, सूर्य कन्या में 19:07, आश्विन संक्रान्ति, मु. 30 (F)
	17	३०	गुरू	पू.फा.	कं.15:07	आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ विसर्जन, चतुर्दशी (G)
प्रथम (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष	18	१	शुक्र	उ.फा.हस्त	कन्या	आश्विन अधिक (मल) मास प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30 (H)
	19	२	शनि	चित्रा	तु.14:52	गुरू पू.षा. 4 में 18:10, सफर (मु.) मास प्रारम्भ
	0	३	शनि	0 0	0 0	तृतीया तिथि का क्षय 00 00
	20	४	रवि	स्वा.	तुला	भ. 16:04 से 26:28 तक
	21	५	चन्द्र	विशा.	वृ.15:17	
	22	६	मंग	अनु.	वृश्चिक	बुध तुला में 16:55, सूर्य सायन तुला में 19:02, दक्षिण गोल प्रारम्भ (I)
	23	७	बुध	ज्ये.	ध.18:25	भ. 19:58 से, राहु मृग. 2 वृष, केतु ज्ये.4 वृश्चिक में 12:52, शक अ.प्रारम्भ
	24	८	गुरू	मूल	धनु	भ. 7:30 तक, गण्डमूल 18:10 तक
	25	९	शुक्र	पू.षा.	म.24:42	
	26	१०	शनि	उ.षा.	मकर	सूर्य हस्त में 24:28
	27	११	रवि	श्रव.	मकर	भ. 7:23 से 17:47 तक, पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत, शुक्र मघा 1 सिंह में 25:01
	28	१२	चन्द्र	धनि.	कुं.9:41	पंचक प्रारम्भ 9:41, बुध स्वा. में 6:25
	29	१३	मंग	शत.	कुम्भ	भौम प्रदोष व्रत, शनि मार्गी 10:30
	30	१४	बुध	पू.भा.	मी.20:37	भ. 24:26 से

(A) प्रोष्ठपदी महालय श्राद्ध प्रारम्भ, सितम्बर मास प्रारम्भ, बुध पश्चिम में उदय 6:08, पूर्णिमा का श्राद्ध (B) में 12:03, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध (C) का श्राद्ध (D) तृतीया का श्राद्ध (E) मासशिवरात्रि व्रत (F) पुण्यकाल सं दोपहर 12:43 बाद, शुक्र आश्ले. में 7:44, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, गण्डमूल 12:21 तक (G) अमावस तिथि का श्राद्ध, बुध चित्रा में 16:45, श्राद्ध समाप्त, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन (H) प्रा (अधिक) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ (I) गण्डमूल 19:19 बाद

वि. संवत् 2077 अक्टूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टै.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दक्षिणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (शरद्–हमेन्त ऋतु)
	1	१५	गुरू	उ.भा.	मीन	भ.13:31 तक, अधि.आश्विन पूर्णिमा, अक्टूबर मास प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायणव्रत
द्वितीया (अधि.) आश्विन कृष्ण पक्ष	2	१	शुक्र	रेव	मीन	द्वितीय (अधिक) आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, महात्मा गांधी जयन्ती, गण्डमूल
	3	२	शनि	रेव	मे.8:51	पंचक समाप्त 8:51, गण्डमूल विचार
	4	२	रवि	अश्वि	मेष	भ. 20:46 से, वक्री मंगल रेव. 4 मीन में 10:06, गण्डमूल 11:52 तक
	5	३	चन्द्र	भर.	वृ.21:42	भ. 10:03 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
	6	४	मंग	कृति.	वृष	स.सि.यो. 17:54 तक
	7	५	बुध	रोहि.	वृष	स.सि.यो.
	8	६	गुरू	मृग.	मि.9:47	भ. 16:37 से 29:14 तक
	9	७	शुक्र	आर्द्रा.	मिथुन	शुक्र पू.फा. में 11:17
	10	८	शनि	पुन.	क.19:10	सूर्य चित्रा में 13:34
	11	९	रवि	पुष्य.	कर्क	भ. 29:17 से, रविपुष्य योग, गण्डमूल 25:19 तक, स.सि.यो.
	12	१०	चन्द्र	आश्ले	सिं.24:30	भ. 16:39 तक, गण्डमूल विचार
	13	११	मंग	मघा	सिंह	पुरूषोत्तम एकादशी व्रत, गण्डमूल 22:54 तक
	14	१२	बुध	पू.फा.	कं.26:02	प्रदोष व्रत, बुध वक्री 6:32
	15	१३	गुरू	उ.फा.	कन्या	भ. 8:34 से 18:44 तक, मासशिवरात्रि व्रत
	0	१४	गुरू	0 0	0 0	चतुर्दशी तिथि का क्षय 00 00
	16	३०	शुक्र	हस्त	तु.25:25	अधि. आश्विन अमावस, आश्विन अधिक (मल) मास समाप्त
द्वितीया (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष	17	१	शनि	चित्रा	तुला	द्वितीय (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शरद नवरात्र प्रारम्भ (A)
	18	२	रवि	स्वा.विशा.	व.24:47	चन्द्रदर्शन, मु. 45,
	19	३	चन्द्र	अनु.	वृश्चिक	भ. 24:14 से, रबि–उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो.
	20	४	मंग	ज्ये.	ध.26:12	भ. 11:19 तक, उपाग्ड़ ललिता व्रत, शुक्र उ.फा. में 16:10 (B)
	21	५	बुध	मूल	धनु	सरस्वती आवाहन मूलभे
	22	६	गुरू	पू.षा.	धनु	सरस्वती पूजन पू.षाभे, सूर्य सायन वृश्चिक में 28:30, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ
	23	७	शुक्र	उ.षा.	म.7:02	भ. 6:57 से 18:58 तक, श्रीदुर्गाष्टमी–महाष्टमी (पश्चिम भारत) (C)
	24	८	शनि	श्रव.	मकर	श्रीदुर्गाष्टमी महाष्टमी, महानवमी (व्रत हेतु), सरस्वती विसर्जन (श्रवणे), बलिदान दिवस
	25	९	रवि	धनि.	कु.15:26	पंचक प्रारम्भ 15:26, नवरात्र समाप्त/पारणा, विजयादशमी (दशहरा) (D)
	26	१०	चन्द्र	शत.	कुम्भ	भ. 21:54 से, भरत–मिलाप
	27	११	मंग	पू.भा.	मी.26:31	भ. 10:47 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, वक्री बुध चित्रा 4 में 14:33
	28	१२	बुध	पू.भा.	मीन	प्रदोष व्रत
	29	१३	गुरू	उ.भा.	मीन	गण्डमूल 12:00 बाद, स.सि.यो. 12:00 बाद
	30	१४	शुक्र	रेव	मे.14:57	भ. 17:46 से, पंचक समाप्त 14:57, शरद पूर्णिमा व्रत (E)
	31	१५	शनि	अश्वि	मेष	भ. 7:03 तक, आश्विन पूर्णिमा, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती (F)

(A) घटस्थापना (प्रातः 7:25 बाद), सूर्य तुला में 7:05, कार्तिक संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. दोपहर 13:29 तक, आकाश दीपदान प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध (B) वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:39 (C) भद्रकाली अवतार, सरस्वती बलिदान उ.षाभे, सूर्य स्वा. में 23:58, शुक्र कन्या मतें 10:44, शक कार्तिक प्रारम्भ (D) महानवमी–बलिदान हेतु, अपराजिता पूजन, आयुध/शास्त्रादि पूजन, सीमोल्लंघन (E) गुरू.उ.षा. 1 में 13:05, कोजागर व्रत, स.सि.यो. (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, शुक्र हस्त में 17:08, कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ, वक्री बुध पूर्व में उदय 23:40, गण्डमूल 17:58 तक

वि. संवत् 2077 नवम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टै.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दक्षिणायन) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (हमेन्त ऋतु)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	१	रवि	भर.	वृ.27:41	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, नवम्बर मास प्रारम्भ, हरियाणा दिवस
	2	२	चन्द्र	कृति	वृष	
	3	३	मंग	रोहि.	वृष	भ. 14:20 से 27:25 तक, बुध मार्गी 23:17
	4	४	बुध	मृग.	मि.15:43	व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु, श्रीगणेश (A)
	5	५	गुरू	आर्द्रा	मिथुन	
	6	६	शुक्र	पुन.	क.25:48	स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्य विशाखा में 8:13, स.सि.यो. 6:45 बाद
	7	६	शनि	पुन.	कर्क	भ. 7:24 से 19:27 तक,
	8	७	रवि	पुष्य	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत, रविपुष्य योग 8:45 तक, गण्डमूल 8:45 बाद
	0	८	रवि	0 0	0 0	अष्टमी तिथि का क्षय 00 00
	9	९	चन्द्र	आश्ले	सिं.8:42	गण्डमूल विचार
	10	१०	मंग	मघा पू.फा.	सिंह	भ. 16:26 से 17:23 तक, गण्डमूल 7:56 तक
	11	११	बुध	उ.फा.	कं. 12:01	रमा एकादशी व्रत, बुध स्वा. में 21:32, शुक्र चित्रा में 15:00 (B)
	12	१२	गुरू	हस्त	कन्या	गोवत्स द्वादशी
	13	१३	शुक्र	चित्रा	तु.12:32	भ. 17:59 से 28:09 तक, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान जयन्ती (C)
	14	१४	शनि	स्वा.	तुला	पितृकार्येषु अमावस (14:18 बाद), नरक चतुर्दशी (पूर्व अरूणोदय वाली) (D)

दीपावली पर्व
14 नवम्बर

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश
	15	३०	रवि	विशा.	वृ.11:58	कार्तिक अमावस (स्नानदान हेतु प्रातः 10:37 तक), अन्नकूट (E)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	16	१	चन्द्र	अनु.	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. 15 भ्रात (भाई) दूज, यज द्वितीया, शुक्र तुला में 25:01 (F)
	0	२	चन्द्र	0 0	0 0	द्वितीया तिथि का क्षय 00 00
	17	३	मंग	ज्ये.	ध.12:22	रबि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार
	18	४	बुध	मूल	धनु	भ. 12:18 से 23:17 तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल 10:40 तक
	19	५	गुरू	पू.षा.	म.15:30	सूर्य अनु. में 14:11, सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), जया पंचमी
	20	६	शुक्र	उ.षा.	मकर	गुरू उ.षा. 2 मकर में 13:22, सूर्य षष्ठी पर्व (छठ पूजा), शनि उ.षा.3 में 7:04
	21	७	शनि	श्रव.	कुं.22:26	भ. 21:49 से, पंचक प्रारम्भ 13:22, बुध विशा. में 18:27, सूर्य सायन धनु में 26:10
	22	८	रवि	धनि.	कुम्भ	भ. 10:21 तक, गोपाष्टमी, शुक्र स्वाती में 10:32, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ
	23	९	चन्द्र	शत.	कुम्भ	अक्षय–कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत, आमला नवमी
	24	१०	मंग	पू.भा.	मी.8:53	
	25	११	बुध	उ.भा.	मीन	भ. 15:57 से 29:11 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), तुलसी (G)
	26	१२	गुरू	रेव.	मे.21:20	पंचक समाप्त 21:20, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव) (H)
	27	१२	शुक्र	अश्वि	मेष	प्रदोष व्रत, बुध वृश्चिक में 31:04, गण्डमूल 24:23 तक
	28	१३	शनि	भर.	मेष	वैकुष्ठ चतुर्दशी, भरणी दीपम्
	29	१४	रवि	कृति.	वृ.10:01	भ. 12:48 से 25:54 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त
	30	१५	चन्द्र	रोहि.	वृष	कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरू नानकदेव जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त (I)

(A) चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी (B) कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ (C) (उ.भारत) (अर्द्धरात्रि व्यापिनी), यम प्रीत्यर्थं दीपदान एवं तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत, मंगल मार्गी 30:06 (D) तौलाभ्यंग, रूप चौदश, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजा, नेहरू जयन्ती (बाल दिवस), सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, श्रीमहावरी निर्वाण (जैन) (E) गोवर्धन पूजा गोक्रडा, बलिपूजा, सूर्य वृश्चिक में 30:53, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. 30, पुष्यकाल सं. अगले दिन दोपहर 13:17 तक, श्रीविश्वकर्मा दिवस (पंजाब) (F) यमुना स्नान, कलम दवात पूजन, विश्वकम्र पूजन (G) विवाह, भीष्मपंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त, राहु मृग. 1 केतु ज्ये. 3 में 10:27, गण्डमूल 18:20 बाद (H) हरिप्रबोधोत्सव, बुध पूर्व में अस्त 17:10 (I) बुध अनुराधा में 10:30, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान)

वि. संवत् 2077 दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य दक्षिण–उत्तरायणे) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (हमेन्त–शिशिर ऋतु)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	१	मंग	रोहि.	मि.21:37	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, दिसम्बर मास प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ
	2	२	बुध	मृग	मिथुन	भ.30:55 से, सूर्य ज्येष्ठा में 18:32, शुक्र विशाखा में 28:35, स.सि.यो.
	3	३	गुरू	आर्द्रा	मिथुन	भ. 19:27 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
	4	४	शुक्र	पुन.	क.7:22	
	5	५	शनि	पुष्य	कर्क	गण्डमूल 14:28 बाद
	6	६	रवि	आश्ले	सिं.14:46	भ. 19:45 से, गण्डमूल विचार
	7	७	चन्द्र	मघा	सिंह	भ. 7:17 तक, गुरू उ.षा. 3 में 20:52, श्रीकालभैरवाष्टमी (A)
	8	८	मंग	पू.फा.	कं.19:31	बुध ज्येष्ठा में 23:29
	9	९	बुध	उ.फा.	कन्या	भ. 26:05 से
	10	१०	गुरू	हस्त	तु.21:52	भ. 12:52 तक, शुक्र वृश्चिक में 29:16, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)
	11	११	शुक्र	चित्रा स्वा.	तुला	उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव)
	0	१२	शुक्र	0 0	0 0	द्वादशी तिथि का क्षय 0 0 0 0
	12	१३	शनि	विशा.	वृ.22:41	भ. 27:53 से, शनि प्रदोष व्रत
	13	१४	रवि	अनु.	वृश्चिक	भ. 14:19 तक, शुक्र अनुराधा में 21:22, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबाला जी (B)
	14	३०	चन्द्र	ज्ये.	ध.23:26	मार्गशीर्ष सोमवती अमावस, तीर्थस्नान, माहात्म्य, मेला हरिद्वार प्रयागराज

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	15	१	मंग	मूल	धनु	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रा. सूर्य 1 धनु में 21:31, पौष संक्रान्ति (C)
	16	२	बुध	पू.षा.	म.25:48	चन्द्रदर्शन. मु. 30
	17	३	गुरू	उ.षा.	मकर	भ. 26:51 से, बुध मूल 1 धनु में 11:37, जमादि उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ
	18	४	शुक्र	श्रव.	कुं.31:16	भ. 14:23 तक, पंचक प्रारम्भ 31:16, स.सि.यो.
	19	५	शनि	धनि.	कुम्भ	श्रीपञ्चमी, श्रीराम विवाहोत्सव, नाग पंचमी, स्कन्द (गुरू) षष्ठी (D)
	20	६	रवि	शत.	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी (पूजन हेतु मध्यान्ह व्यापिनी), चम्पा षष्ठी
	21	७	चन्द्र	पू.भा.	मी.16:29	भ. 16:16 से 29:16 तक, सूर्य सायन मकर में 15:32, मित्र (विष्णु) (E)
	22	८	मंग	उ.भा.	मीन	शक पौष प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, गण्डमूल 25:37 बाद, स.सि.यो. 25:37 तक
	23	९	बुध	रेव.	मे.28:33	पंचक समाप्त 28:33, गुरू उ.षा. 4 में 11:14, नन्दा नवमी, गण्डमूल विचार
	24	१०	गुरू	अश्वि	मेष	मंगल अश्वि 1 मेष में 10:18, शुक्र ज्येष्ठा में 13:25, शनि उ.षा. 4 में 23:26
	25	११	शुक्र	अश्वि	मेष	भ. 12:37 से 25:55 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती (F)
	26	१२	शनि	भर.	वृ.17:18	अखण्ड द्वादशी
	27	१३	रवि	कृति.	वृष	प्रदोष व्रत
	28	१४	चन्द्र	रोहि.	मि.28:39	सूर्य पू.षा. में 23:44, पिशाचमोचन श्राद्ध
	29	१४	मंग	मृग.	मिथुन	भ. 7:55 से 20:27 तक, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (G)
	30	१५	बुध	आर्द्रा	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा (स्नानदानादि प्रातः 8:58 तक)
पौ0	31	१	गुरू	पुन.	क.13:38	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, स.सि.यो.

(A) भैरव जयन्ती, गण्डमूल 14:33 तक (B) जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू) (C) 30, मुहू., पुण्यकाल सं. मध्यान्ह बाद, गण्डमूल 21:31 तक (D) (व्रत हेतु सायान्ह व्यापिनी) (E) सप्तमी, सायन उत्तरायण शुरू, शिशिर ऋतु प्रारम्भ (F) बुध पू.षा. में 21:19, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन), गण्डमूल 7:36 तक (G) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरभैरव जयन्ती

वि. संवत् 2077 जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (शिशिर ऋतु)
पौष कृष्ण पक्ष	1	२	शुक्र	पुष्य	कर्क	भ.21:22 से, जनवरी सन् 2021 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 20:15 बाद
	2	३	शनि	आश्ले	सिं.20:17	भ. 9:10 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, बुध उ.षा. में 27:04
	3	४	रवि	मघा	सिंह	शुक्र मूल 1 धनु में 29:03, गण्डमूल 19:57 तक
	0	५	रवि	0 0	0 0	पंचमी तिथि का क्षय 0 0 0 0
	4	६	चन्द्र	पू.फा.	कं.25:04	भ. 29:47 से, बुध मकर में 27:55
	5	७	मंग	उ.फा.	कन्या	भ. 16:56 तक
	6	८	बुध	हस्त	तु.28:29	गुरू श्रवण 1 में 27:44, रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध, स.सि.यो.
	7	९	गुरू	चित्रा	तुला	शनि पश्चिम में अस्त 17:40
	8	१०	शुक्र	स्वा.	वृ.30:58	भ. 10:50 से 21:41 तक, श्रीपाश्वनाथ जयन्ती (जैन)
	9	११	शनि	विशा.	वृश्चिक	सफला एकादशी व्रत
	10	१२	रवि	अनु.	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, सूर्य उ.षा. में 25:44, बुध श्रवण में 30:20, बुध पश्चिम में उदय 29:18
	11	१३	चन्द्र	ज्ये.	ध.9:09	भ. 14:33 से 25:28 तक, मासिक शिवरात्रि व्रत, गण्डमूल
	12	१४	मंग	मूल पू.षा.	धनु	पितृकार्येषु अमावस (तर्पणादि 12:23 बाद), स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (A)
	13	३०	बुध	उ.षा.	म.12:06	पौष अमावस (स्नानदानादि प्रातः 10:30 तक), लोहड़ी पर्व
	14	१	गुरू	श्रव.	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य मकर में 8:14, मकर (माघ), संक्रान्ति, मु. 30 (B)

पौष शुक्ल पक्ष	15	२	शुक्र	धनि.	कुं.17:06	पंचक प्रारम्भ 17:06, जमादि उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ
	16	३	शनि	शत.	कुम्भ	भ. 19:58 से,
	17	४	रवि	पू.भा.	मी.25:16	भ. 8:09 तक, गुरू पश्चिम में अस्त 17:52
	18	५	चन्द्र	पू.भा.	मीन	
	19	६	मंग	उ.भा.	मीन	बुध धनिष्ठा में 21:52, सूर्य सायन कुम्भ में 26:10, गण्डमूल 9:55 बाद
	20	७	बुध	रेव.	मे.12:36	भ. 13:16 से 26:34 तक, पंचक समाप्त 12:36, मार्तण्ड सप्तमी (C)
	21	८	गुरू	अश्वि	मेष	गुरू श्रवण 2 में 8:45, शक माघ प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत (D)
	22	९	शुक्र	भर.	वृ.25:25	मंगल भरणी में 13:00, शनि श्रवण 1 में 17:41
	23	१०	शनि	कृति.	वृष	सूर्य श्रवण में में 27:58, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
	24	११	रवि	रोहि.	वृष	भ. 9:58 से 22:58 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत
	25	१२	चन्द्र	मृग.	मि.13:03	बुध कुम्भ में 16:55, शुक्र उ.षा. में 11:39, सुजन्म द्वादशी, स.सि.यो.
	26	१३	मंग	आर्द्रा	मिथुन	भौम प्रदोष व्रत, भारत गणतन्त्र दिवस (72वाँ)
	27	१४	बुध	पुन.	क.21:43	भ. 25:18 से, शुक्र मकर में 27:29, ईशान व्रत
	28	१५	गुरू	पुष्य	कर्क	भ. 13:02 तक, पौष पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ (E)
माघ कृष्ण	29	१	शुक्र	आश्ले	सिं.27:21	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार
	30	२	शनि	मघा	सिंह	बुध वक्री 21:18, गण्डमूल 26:28 तक
	31	३	रवि	पू.फा.	कं.30:58	भ.9:19 से 20:25 तक, श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत (F)

गुरू अस्त
17 जनवरी

(A) गण्डमूल 7:38 तक (B) पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से दोपहर 14:38 तक, कुम्भ महापर्व स्नान माहात्म्य प्रारम्भ (हरिद्वार), निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, शुक्र पू.षा. में 20:21, यूरेनस मार्गी 14:07, आरोग्य व्रत, गुरू वार्धक्य प्रारम्भ 17:52 (C) श्रीगुरू गोबिन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मतेन) (D) गण्डमूल 15:36 तक (E) शाकम्भरी जयन्ती, गुरूपुष्य योग, स.सि.यो. (F) गौरी वक्रतुण्ड चतुर्थी

वि. संवत् 2077 फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (शिशिर–वसन्त ऋतु)
माघ कृष्ण पक्ष	1	४	चन्द्र	उ.फा.	कन्या	फरवरी सन् 2021 ई. प्रारम्भ
	2	५	मंग	हस्त	कन्या	वक्री बुध पश्चिम में अस्त 7:26
	3	६	बुध	चित्रा	तु.9:50	भ. 14:13 से 25:11 तक, शीतला षष्ठी
	4	७	गुरू	स्वा.	तुला	वक्री बुध मकर में 22:40, गुरू श्रवण 3 में 9:50, शुक्र श्रवण में 27:01
	5	८	शुक्र	विशा.	वृ.12:47	सूर्य धनिष्ठा में 31:11, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 18:11
	6	९	शनि	अनु.	वृश्चिक	भ. 19:21 से 30:27 तक, गण्डमूल 17:18 बाद
	0	१०	शनि	0 0	0 0	दशमी तिथि का क्षय 0 0 0 0
	7	११	रवि	ज्ये.	ध.16:15	षट्तिला एकादशी व्रत (स्मार्त), गण्डमूल विचार
	8	१२	चन्द्र	मूल	धनु	षट्तिला एकादशी व्रत (वैष्णव), तिल द्वादशी, शुक्र पूर्व में अस्त 18:11 (A)
	9	१३	मंग	पू.षा.	म.20:30	भ. 26:06 से, भौम प्रदोष व्रत, शनि पूर्व में उदय 24:50
	10	१४	बुध	उ.षा.	मकर	भ. 13:28 तक, वक्री बुध श्रवण 4 में 22:46, मासशिवरात्रि व्रत
	11	३०	गुरू	श्रव.	कुं.26:11	माघ (मौनी) अमावस (स्नानदानादि), महोदय योग (14:05तक, पितृ तर्पणादि)(B)
माघ शुक्ल पक्ष	12	१	शुक्र	धनि.	कुम्भ	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य कुम्भ में 21:11, फाल्गुन संक्रान्ति, मु. 15 (C)
	13	२	शनि	शत.	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती (ध्यानपुर) पं.
	14	३	रवि	पू.भा.	मी.10:09	गुरू पूर्व में उदय 23:46, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गौरी तृतीया (D)
	15	४	चन्द्र	उ.भा.	मीन	भ. 14:49 से 27:38 तक, श्रीगणेश तिल चतुर्थी, वरद् (कुन्द) चतुर्थी (E)
	16	५	मंग	रेव.	मे.20:57	पंचक समाप्त 20:57, वसन्त पञ्चमी, श्री पञ्चमी, सरस्वती पूजन (F)
	17	६	बुध	अश्वि	मेष	गुरू बाल्यत्व समाप्त 23:46, गण्डमूल 23:49 तक
	18	६	गुरू	भर.	मेष	गुरू श्रवण 4 में 13:13, सूर्य सायन मीन में 16:14, वसन्त ऋतु प्रारम्भ
	19	७	शुक्र	कृति.	वृ.9:41	भ. 10:59 से 24:16 तक, रथ आरोग्य सप्तमी (पूर्वारूणोदय वाली) (G)
	20	८	शनि	रोहि.	वृष	भीष्माष्टमी, शुक्र कुम्भ में 26:21, शक फाल्गुन प्रारम्भ (H)
	21	९	रवि	रोहि.	मि.21:55	मंगल वृष में 28:35, गुपत नवरात्रे समाप्त
	22	१०	चन्द्र	मृग.	मिथुन	भ. 29:42 से, स.सि.यो. 10:58 तक
	23	११	मंग	आर्द्रा	मिथुन	भ. 18:06 तक, जया एकादशी व्रत
	24	१२	बुध	पुन.	क.7:10	प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी
	25	१३	गुरू	पुष्य	कर्क	मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ 3 दिन, गुरूपुष्य योग 13:17 तक (I)
	26	१४	शुक्र	आश्ले	सिं.12:35	भ. 15:50 से 26:49 तक, शुक्र शतभिषा में 10:20, श्रीसत्यनारायण व्रत
	27	१५	शनि	मघा	सिंह	माघ पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरू रविदास जयन्ती (J)
फा. कृ.	28	१	रवि	पू.फा	कं.15:07	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ

शुक्र अस्त 8 फरवरी

गुरू उदय 14 फरवरी

(A) गण्डमूल 15:21 तक (B) विशेष माहात्म्य, पंचक प्रारम्भ 26:11, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि (C) पुण्यकाल सं. दोपहर 2:47 से अगले दिन दोप. 13:11 तक, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ (D) (गोंतरी) व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:20 (E) मंगल कृतिका में 31:05, शुक्र धनिष्ठा में 18:30 (F) वागेश्वरी जयन्ती (G) पुत्र सप्तमी व्रत, अचला भानु सप्तमी, सूर्य शतभिषा में 11:36, शनि श्रवण 2 में 29:51 (H) बुध मार्गी 30:20, स.सि.यो. (I) स.सि.यो. 13:17 तक (J) श्रीललिता जयन्ती, गण्डमूल 11:18 तक

वि. संवत् 2077 मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वसन्त ऋतु)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	२	चन्द्र	उ.फा.हस्त	कन्या	भ. 19:12 से 29:47 तक, मार्च सन् 2021 ई. प्रारम्भ
	0	३	चन्द्र	0 0	0 0	तृतीया तिथि का क्षय 0 0 0 0
	2	४	मंग	चित्रा	तु.16:30	अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
	3	५	बुध	स्वा.	तुला	शुक्र अस्त है
	4	६	गुरू	विशा.	वृ.18:20	भ. 21:59 से, सूर्य पू.भा. में 17:58, गुरू धनिष्ठा 1 में 25:56
	5	७	शुक्र	अनु.	वृश्चिक	भ. 8:57 तक, बुध धनिष्ठा में 7:13, श्रीनाथ उत्सव, गण्डमूल 22:38 बाद
	6	८	शनि	ज्ये.	ध.21:38	जानकी व्रत (मतान्तरे)
	7	९	रवि	मूल	धनु	भ. 28:17 से, स.सि.यो. 20:59 तक, गण्डमूल 20:59 तक
	8	१०	चन्द्र	पू.षा.	म.26:39	भ. 15:45 तक, शुक्र पू.भा. में 26:33, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती
	9	११	मंग	उ.षा.	मकर	विजया एकादशी व्रत
	10	१२	बुध	श्रव.	मकर	प्रदोष व्रत
	11	१३	गुरू	धनि.	कुं.9:21	भ.14:40 से 26:52 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पंचक प्रारम्भ 9:21 (A)
	12	१४	शुक्र	शत.	कुम्भ	
	13	३०	शनि	पू.भा.	मी.17:57	फाल्गुन (शनिवासरी) अमावस (स्नानदान, तर्पणादि)
	14	१	रवि	उ.भा.	मीन	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य मीन में 18:03, चैत्र संक्रान्ति(B)
	15	२	चन्द्र	रेव.	मं.28:44	पंचक समाप्त 28:44, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फूलेरा दूज (C)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष	16	३	मंग	अश्वि	मेष	बुध शतभिषा में 18:30, शुक्र मीन में 27:00, स.सि.यो.
	17	४	बुध	अश्वि	मेष	भ. 10:14 से 23:29 तक, सूर्य उ.भा. में 26:21, अविघ्नकर व्रत (D)
	18	५	गुरू	भर.	वृ.17:22	याज्ञवल्क्य जयन्ती
	19	६	शुक्र	कृति.	वृष	शुक्र उ.भा. में 19:13
	20	७	शनि	रोहि.	मि.30:09	गुरू धनिष्ठा 2 में 8:40, सूर्य सायन मेष में 15:08, उत्तर गोल प्रारम्भ (E)
	21	७	रवि	मृग.	मिथुन	भ.7:11 से 20:06 तक, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी (मध्यान्ह व्यापिनी)
	22	८	चन्द्र	आर्द्रा	मिथुन	शक चैत्र एवं संवत् 1943 प्रारम्भ
	23	९	मंग	पुन.	क.16:30	होलाष्टक 21 से 28 मार्च
	24	१०	बुध	पुष्य	कर्क	भ. 2206 से, गण्डमूल 23:12 बाद
	25	११	गुरू	आश्ले	सिं.22:49	भ. 9:48 तक, आमलकी एकादशी व्रत, गोविन्द द्वादशी, बुध पू.भा. में (F)
	26	१२	शुक्र	मघा	सिंह	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 21:39 तक
	0	१३	शुक्र	0 0	0 0	त्रयोदशी तिथि का क्षय 0 0 0 0
	27	१४	शनि	पू.फा.	कं.25:20	भ. 27:37 से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
	28	१५	रवि	उ.फा.	कन्या	भ. 13:53 तक, फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन (प्रदोषकाले) (G)
चैत्र कृष्ण	29	१	चन्द्र	हस्त	तु.25:42	चैत्रकृष्णपक्ष प्रारम्भ, होली पर्व, होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)(H)
	30	२	मंग	चित्रा	तुला	भ. 27:48 से, शुक्र रेवती से 12:32, राहु रोहि. 3 केतु ज्ये 1 में 29:42 (I)
	31	३	बुध	स्वां.	वृ.25:56	भ. 14:07 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, सूर्य रेवती में (J)

(A) मंगल रोहिणी में 11:46, बुध कुम्भ में 12:30 (B) पुण्यकाल सं. दोपहर 11:39 बाद, गण्डमूल 26:20 बाद (C) (मथुरा), उ.प्र. शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ (D) गण्डमूल 7:31 तक (E) महाविष्णुव दिन, स.सि.यो. (F) 21:57, शनि श्रवण 3 में 9:45, (G) होलाष्टक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, लक्ष्मीनारायण व्रत (H) वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धूलिवन्दन, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, आम्रकुसुम प्राशन (I) सन्त तुकाराम जयन्ती (J) 13:14, बुध मीन में 24:42

वि. संवत् 2077 अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	नक्षत्र	चंद्र राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्योत्तरायण) घण्टा–मिनटों में (भा.स्टै.टा.) (वसन्त ऋतु)
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	४	गुरू	विशा.अनु.	वृश्चिक	श्री भगवान्नारायण जयन्ती, अप्रैल सन् 2021ई में प्रारम्भ, गण्डमूल 29:19 बाद
	2	५	शुक्र	ज्ये.	ध.27:44	भ. 29:59 से, मंगल मृगशिर में 23:08, बुध उ.भा. में 22:58 (A)
	0	६	शुक्र	0 0	0 0	षष्ठी तिथि का क्षय 00 00 00
	3	७	शनि	मूल	धनु	भ. 17:06 तक, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 26:39 तक
	4	८	रवि	पू.षा.	धनु	शीतलाष्टमी व्रत,
	5	९	चन्द्र	उ.षा.	म.08:02	गुरू धनि. 3 कुम्भ में 24:23, बुध पूर्व में अस्त 30:04, कुम्भ स्नान माहात्म्य प्रारम्भ (हरिद्वार)
	56	१०	मंग	श्रव.	मकर	भ. 14:15 से 26:10 तक
	7	११	बुध	धनि.	कुं.15:00	पंचक प्रारम्भ 15:00, पापमोचनी एकादशी व्रत
	8	१२	गुरू	शत.	कुम्भ	वारूणी योग 27:16 से 28:57 तक, वारूणी पर्व
	9	१३	शुक्र	पू.भा.	मी.24:17	भ. 28:28 से, प्रदोष व्रत, बुध रेवती में 29:07
	10	१४	शनि	पू.भा.	मीन	भ. 17:16 तक, शुक्र अविश्वनी 1 मेष में 6:28, मासिक शिवरात्रि व्रत (B)
	11	३०	रवि	उ.भा.	मीन	पितृकार्येषु अमावस
	12	३०	चन्द्र	रेव	मे.11:29	चैत्र (सोमवती) अमावस, पंचक समाप्त 11:29, मेला हरिद्वार (C)

(A) एकनाथ षष्ठी, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ), मेला गुरू रामराय (देहरादून) (B) मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)
(C) (कुम्भ महापर्व स्नान माहात्म्य), प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य, विक्रमी संवत 2077 पूर्ण

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार – प्रातः 7.30 से प्रातः 9.00 बजे तक
मंगलवार – अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे तक
बुधवार – दोपहर 12.00 से 1.30 बजे तक
बृहस्पतिवार – दोपहर 1.30 से 3.00 बजे तक
शुक्रवार – प्रातः 10.30 से दोपहर 12.00 बजे तक
शनिवार – प्रातः 9.00 से प्रातः 10.30 बजे तक
रविवार – सायं 4.30 से सायं 6.00 बजे तक

नोट : यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

अधिक मास में त्याज्य कर्म/कार्य

अधिकमास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले प्रायः सभी काम वर्जित हैं और फल की आशा से रहित होकर करने के आवश्यक सब काम किए जा सकते हैं। ज्योतिषआचार्यो के मतानुसार अधिक (पुरूषोत्तम) मास में कुछ नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को करने का निषेध माना गया है। जैसे विवाह, यज्ञा, देव-प्रतिष्ठाा, महादान, चूड़ाकर्म (मुण्डन), पहले कभी न देखो हुए देवतीर्थो में गमन, नवगृह प्रवेश, वृषोत्सर्ग, भूमि आदि सम्पत्ति की खरीद (क्रय), नई गाड़ी का क्रय आदि शुभ कार्यों का आरम्भ अधिक मास काल में नहीं करना चाहिए :-

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्ग चूडाकरणमेखलाः।।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।। (गर्गाचार्य)

इसके अतिरिक्त अन्य अनित्य व अनैमित्तिक कार्य जैसे नववधू प्रवेश, नव यज्ञोपवीत धारण, व्रतोद्यापन, नव अलंकार, नवीन वस्त्रादि धारण करना, कूआं, तालाब, बाबली, बाग आदि का खनन करना, भूमि, वाहनादि का क्रय करना, काम्य व्रत का आरम्भ, भूमि, सुवर्ण, तुला, गायादि का दान, अष्टका श्राद्ध, उपनयन, द्वितीय वार्षिक श्राद्ध, उपाकर्मादि कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

अधिक (पुरूषोत्तम) मास में करणीय कर्म

अधिक (मल) मास में जिस काम्य कर्म के प्रयोग का आरम्भ अधिक मास में पहले ही हो चुका हो, उसकी सम्पूर्ति अधिक मास में विहित है। मलमास में करने वाले का वार्षिक श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, पितरों की क्रिया करना, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध, यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा। अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है, उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मलमास में ही किसी की मृत्यु हो, तो उससे जो 12वाँ मास हो, उसमें प्रेतक्रिया को समाप्त करना चाहिए। तीव्र ज्वर या प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रूद्रपूजादि अनुष्ठान, पुत्र/सन्तान जन्म के बाद अन्नप्राश्न, गण्डमूल, जन्मदिन पूजन सम्बन्धी आवश्यक (दिन-निर्धारित) कर्म, कपिल षष्ठी जैसे दुर्लभ योगों के प्रयोग, नित्य पूजा जप दानादि कर्म अथवा ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध, दान, जपादि किए जा सकते हैं :-

आवश्यकर्म मासाख्यं मलमासमृताब्दिकम्।
तीर्थेभच्छाययोः श्राद्धमाधानाग्ड पितृक्रियाम्।। (सूर्योदय) (ज्यो.नि.)

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नामवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण, नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूल)	पश्चिम, नैऋत्य (दिशा.-पश्चि.कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चिम)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली मेडिकल एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	लेखनादि कार्य, मेडीकल, शिक्षा, सौंदार्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी	बिजली (इलै.), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि इन्जर, ज्योतिष, विज्ञान वाहनादि चलाना सीखना	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद, प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (इंजी.), अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरू करना
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चांदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मेडिकल, इलेक्ट्रीकल मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि, तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी, इलेक्ट्रानिक्स, स्पोर्टस सामान, सोना, तांबा, क्रय, भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (एकाउण्टेंट) शिक्षण, वकालत, शिल्प एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आमुषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टेलीविजन, स्त्रियों एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, फई, कपड़ा, बैंकिंग, चांदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोड़ा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु	मशीनरी, लोहा, लकड़ी, चमड़ा, सीमेंट, तेल, पेट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शास्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग, विदेश-यात्रादि कार्य